

---

Shri DakShinamurti Navaratnamalika Stotra

श्रीदक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिकास्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : Shri DakShinamurti Navaratnamalika Stotra

File name : daksh9.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc\_shiva

Author : Not known

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Translated by : -

Description-comments : Hymn of 9 verses in praise of Dakshinamurti

Latest update : March 6, 2003

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीदक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिकास्तोत्रम्



॥ श्री दक्षिणामूर्ति नवरत्नमालिका स्तोत्रम् ॥

मूलेवटस्य मुनिपुङ्गवसेव्यमानं

मुद्राविशेषमुकुलीकृतपाणिपद्मम् ।

मन्दस्मितं मधुरवेषमुदारमाद्यं

तेजस्तदस्तु हृदि मे तरुणेन्दुचूडम् ॥ १ ॥

शान्तं शारदचन्द्रकान्तिधवलं चन्द्राभिरमाननं

चन्द्रार्कोपमकान्तिकुण्डलधरं चन्द्रावदातांशुकम् ।

वीणापुस्तकमक्षसूत्रवलयं व्याख्यानमुद्रांकरै-

र्बिभ्राणं कलये हृदा मम सदा

शास्तारमिष्टार्थदम् ॥ २ ॥

कर्पूरपात्रमरविन्ददळायताक्षं

कर्पूरशीतलहृदं करुणाविलासम् ।

चन्द्रार्धशेखरमनन्तगुणाभिराम-

मिन्द्रादिसेव्यपदपङ्कजमीशमीडे ॥ ३ ॥

द्युद्रोधः स्वर्णमयासनस्थं

मुद्रोल्लसद्बाहुमुदारकायम् ।

सद्रोहिणीनाथकळावतंसं

भद्रोदधिं कञ्चन चिन्तयामः ॥ ४ ॥

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिणयनं श्वेताङ्गरागप्रभं

बालं मौञ्जिधरं प्रसन्नवदनं न्यग्रोधमूलेस्थितम् ।

पिङ्गाक्षं मृगशावकस्थितिकरं सुब्रह्मसूत्राकृतिम्

भक्तानामभयप्रदं भयहरं श्रीदक्षिणामूर्तिकम् ॥

५ ॥

श्रीकान्तद्रुहिणोपमन्यु तपन स्कन्देन्द्रनन्द्यादयः  
प्राचीनागुरवोऽपियस्य करुणालेशाद्रतागौरवम् ।  
तं सर्वादिगुरुं मनोज्ञवपुषं मन्दस्मितालङ्कृतं  
चिन्मुद्राकृतिमुग्धपाणिनलिनं चित्तं शिवं कुर्महे ॥ ६ ॥

कपर्दिनं चन्द्रकळावतंसं  
त्रिणेत्रमिन्दुपतिमाननोज्वलम् ।  
चतुर्भुजं ज्ञानदमक्षसूत्र-  
पुस्ताग्निहस्तं हृदि भावयेच्छिवम् ॥ ७ ॥

वामोरूपरिसंस्थितां गिरिसुतामन्योन्यमालिंगितां  
श्यामामुत्पलधारिणी शशिनिभांचालोकयन्तं शिवम् ।  
आश्लिष्टेन करेण पुस्तकमधो कुंभं सुधापूरितं  
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरैर्मुक्ताक्षमालां भजे  
॥ ८ ॥

वटतरुनिकटनिवासं पटुतरविज्ञानमुद्रितकराब्जम् ।  
कञ्चनदेशिकमाद्यं कैवल्यानन्दकन्दलं वन्दे ॥ ९ ॥  
इति श्री दक्षिणामूर्ति नवरत्नमाला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Sunder Hattangadi

---

—  
*Shri DakShinamurti Navaratnamalika Stotra*

pdf was typeset on August 30, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

